भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 11-08-2026

बिहार में एल नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

अगस्त माह के बीते 10 दिनों में राज्य में सामान्य (79.9 मिमी) वर्षा दर्ज की गई है। जून की शुरुआत से लेकर अब तक राज्य की मानसूनी वर्षा में लगभग 36% की कमी बनी हुई है। राज्य के 34 जिलों में बारिश की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, विशेषकर जहानाबाद में (-63%)। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के पूर्वानुमान के अनुसार, आने वाले दिनों में राज्य के अधिकतम तापमान और न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होने की संभावना है। 12 से 16 अगस्त के मध्य, राज्य में कुछ स्थानों पर हल्के स्तर की वर्षा (2.5-15.5 मिलीमीटर) और अनेक स्थानों पर मध्यम से भारी स्तर की वर्षा (15.6-115.5 मिलीमीटर) की संभावना है। ऐसे में लोगों को स्थिति पर निगरानी बनाए रखने की सलाह दी गई है क्योंकि संभावित वर्षा/ मेघगर्जन/ वज्रपात से जान-माल एवं पशुधन को हानि हो सकती है। एल नीनो जनित मौसमीय चुनौतियों से निपटने और फसलों को इसके संभावित नुकसान से बचाने के लिए, राज्य के किसानों को भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- धान की रोपनी का कार्य यथाशीघ्र पूरा कर लें, या वैकल्पिक फसलों पर विचार करें।
- संभावित वर्षा का पूरा लाभ लेने के लिए, मेड़ों की मरम्मत करें ताकि खेतों में ही वर्षा जल का संचय किया जा सके। खेत की जल धारण क्षमता बढ़ाने के लिए मेड़ों की ऊँचाई (30-35 सेमी तक) बढ़ा दें। यथासंभव खेत के एक छोटे से हिस्से में गड्ढानुमा आकार अवश्य बनाएं। वर्षा संकट के समय यह पानी पूरी फसल को बचा सकता है।
- सूखे के दौरान, खेत को खरपतवार-मुक्त रखें। धान, अरहर एवं मक्का के खेतों में पौधों की उचित संख्या सुनिश्चित करें। नमी की भारी कमी रहने पर, धान के अतिरिक्त कल्ले निकाल लें।
- खेत की सिंचाई केवल तभी करें जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखने लगें। सिंचाई के लिए खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गिला और सूखा' सिंचाई पद्धति अपनाएं।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु खेत की कतारों के बीच मल्चिंग शीट का प्रयोग किया जा सकता है अथवा जहाँ संभव हो, कोनो-वीडर से भी यांत्रिक तरीके से खरपतवार हटा लें।
- धान की बुआई के 15-20 दिनों पर अंकुरण-बाद खरपतवारनाशी जैसे बिस्पायरीबैक सोडियम (सक्रिय तत्व) का 20-25 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव, खरपतवार में 2-3 पत्ती की अवस्था में करें। एक हैन्ड वीडींग, 50-55 दिनों पर करना हितकर होगा।
- उचित पोषक तत्व प्रबन्धन के लिए गोबर की खाद, केंचुआ खाद (वर्मीकंपोस्ट) का उपयोग करें। यह जैविक खाद मिट्टी की पानी रोकने की क्षमता को बढ़ाते हैं। किसी भी फसल में बुवाई के समय एक ही बार में भारी मात्रा में नाइट्रोजन (यूरिया) देने के बजाय, इसे 3-4 बार में थोड़ा-थोड़ा करके दें।
- पोषक तत्वों के नुकसान को कम करने के लिए नीम-कोटेड यूरिया का इस्तेमाल करें। बारिश/ मौसम साफ होने के बाद या सिंचाई के बाद ही हल्की नमी में फसल को पोषक तत्व दें/ टॉप-ड्रेसिंग करें।

- संभावित वर्षा के जल संचय हेतु, वर्षा जल प्रबंधन तकनीकियों जैसे- छतों पर वर्षा जल संचयन, तालाब, परकोलेशन टैंक, कंटूर बंडिंग एवं ग्रेडेड बंड, चेक डैम, गली प्लगिंग, रिचार्ज पिट, रिचार्ज कुएँ, ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई, रेज्ड और सनकेन बेड प्रणाली को अपनाएं। वर्षा संकट के समय सूखे जैसी स्थितियों से निपटने के लिए, यह संचयित जल वरदान साबित हो सकता है।
- अत्यधिक वर्षा की स्थिति में, जिन निचले क्षेत्रों में जलजमाव की संभावना हो, वहां मक्का, अरहर और सब्जियों (जैसे मिर्च, टमाटर, बैंगन) की फसल में अतिरिक्त पानी निकलने के लिए निकास नालियां तैयार करें।
- संभावित स्थितियों में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें। कीट प्रबंधन के लिए खेतों में फेरोमोन और स्टिकी ट्रैप लगाएं। गंभीर स्थितियों में ही रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग करें।
- मवेशियों का खुरपका-मुहपका, गला घोंटू और लंगड़ी के लिए टीकाकरण अवश्य करें। बकरियों को पीपीआर का टीका लगवाएं। पशुओं को पेट के कीड़ों के लिए दवा दें। पशुओं को हरा चारा काटकर तुरंत न दें, इसे रात भर जमीन में फैलाकर सुखाने के बाद ही दें। पशुओं को फफूंदी वाला भूसा न खिलाएं।